भारतीय और रूसी व्यापारियों की बैठक के दौरान प्रधान मंत्री की टिप्पणी

नवम्बर 12, 2007
मॉस्को

आप सभी से मॉस्को में मिलकर मुझे बहुत प्रसन्नता हो रही है। रूस और भारत के उद्यमियों और व्यापारियों के बीच होने वाली बातचीत को मैं बहुत महत्वपूर्ण मानता हूँ। आप दोनों विश्व की गति से विकास कर रही अर्थ व्यवस्थाओं में से दो अर्थव्यवस्थाओं के व्यापार और उद्योग का प्रतिनिधित्व करते हैं।

1991 से बाद की अवधि में भारत और रूस के आर्थिक संबंधों के स्वरूप के बारे में पुनः व्याख्या की गई है। हमारे बाजारों और आर्थिक सुधारों की तीव्र गति के परिणाम स्वरूप हमारे दोनों देशों में दस खरब डालर की अर्थव्यवस्थाएं विकसित हुई हैं।

भारतीय अर्थव्यवस्था में आजकल लगभग 9% की वार्षिक जी डी पी की दर से वृद्धि हो रही है। ऐसी वृद्धि दर वर्ष दर वर्ष पहले कभी भी नहीं रही। हमारा लक्ष्य 11 वीं पंचवर्षीय योजना अवधि के दौरान 10% की वृद्धि दर हासिल करना है।

हमारे पास मजबूत समष्टि आर्थिक आधार हैं। हमारे विकास की प्रक्रिया मुख्य तौर पर बढ़ी हुई घरेलू खपत पर निर्भर करती है। हमारा विदेशी मुद्रा भंडार 250 बिलियन अमरीकी डालर से अधिक हो गया है। हमें उम्मीद है कि इस वर्ष लगभग 30 अमरीकी डालर का प्रत्यक्ष विदेशी निवेश होना चाहिए। हमारी बचत और निवेश दर हमारी जी डी पी का लगभग 35% है।

हमारे यहां बहुत ही लाभोन्मुख एवं अनुकूल जनसांख्यिकीय प्रोफाइल और एक उपयुक्त शैक्षणिक प्रणाली विद्यमान है। हमारी योजना है कि देश में 6000 मॉडल स्कूल स्थापित किए जाएं, 30 नए केंद्रीय विश्विवद्यालय, 370 नए कोलज खोले जाएं, और प्रौद्योगिकी, प्रबंधन और वैज्ञानिक संस्थाओं का व्यापक विस्तार किया जाए। हमने व्यावसायिक, शैक्षणिक और कौशल विकास कार्यक्रमों को और अधिक व्यापक बनाने की घोषणा की है।

वर्तमान में भारत में ढांचागत विकास को उच्च प्राथमिकता दी जा रही है।

आगामी पांच वर्षों के दौरान हमारी ढांचागत आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए 450 विलियन डालर से भी अधिक धनराशि के व्यय का अनुमान लगाया गया है। वर्तमान व्यवस्थाओं को संस्थागत कम स्वरूप प्रदान किया गया है ताकि जन एवं निजी भागीदारी, बोली लगाने की व्यवस्थित प्रणालियों और नवीन वित्त पोषण व्यवस्थाओं के माध्यम से उच्च स्तर के निवेश को जारी रखा जा सके।

इस प्रकार भारत में बहुत से अवसर उपलब्ध हैं और हमारी सरकार सुविधाएं उपलब्ध कराने के लिए कृत संकल्प है। परंतु सरकार कुछ हद तक ही सुविधाएं एवं सहयोग प्रदान कर

सकती है। भारत और रूस के व्यापारी समुदायों के बीच जो सक्रिय द्वि-पक्षीय संबंध हैं, उसका कोई विकल्प नहीं है। मैं यह मानता हूँ कि आज की यह बैठक इस दिशा में उठाया गया एक महत्वपूर्ण कदम है।

भारत और रूस के बीच व्यापार और निवेश के संबंधों के परिणाम स्वरूप हमारी उत्कृष्ट राजनीतिक समझबूझ काफी पीछे है और हम नीतिगत भागीदारी के लिए संयुक्त रूप से समर्पित हैं। इसलिए राष्ट्रपति पुतिन और मैंने इस पहलू को उच्च प्राथमिकता देने के निश्चय किया है। हम चाहते हैं कि हमारे आर्थिक संबंध बढ़ें और भारत-रूस नीतिगत भागीदारी के संबंध में महत्वपूर्ण आधार साबित हों।

यदि रूस का व्यापार चीन के साथ 35 विलियन अमरीकी डालर और यूरोपीय संघ के साथ 200 विलियन यूरो से भी अधिक है तो मुझे ऐसा कोई कारण समझ में नहीं आता कि भारत-रूस के बीच व्यापार 4 बिलियन यू एस डालर से भी कम हो।

अपने पिछले दौरे के दौरान हमने भारत-रूस का एक संयुक्त अध्यन दल गठित करने का निर्णय लिया था, जो भारत और रूस के बीच द्विपक्षीय व्यापार को 2010 तक 10 बिलियन अमरीकी डालर तक पहुँचाने के लिए अपने सुझाव देगा। मुझे आप सभी को यह सूचित करते हुए खुशी है कि भारत सरकार ने संयुक्त अध्यन दल रिपोर्ट अनुमोदित कर दी है। हमने संयुक्त अध्ययन दल की सिफारिशों को लागू करने के लिए संयुक्त कार्य दल के गठन का भी निर्णय लिया है।

मैं, इस मौके पर भविष्य में सहयोग देने के लिए कुछ अन्य महत्वपूर्ण क्षेत्रों का उल्लेख करना चाहूँगा। भारत की ऊर्जा आवश्यकताएं दिन प्रति दिन बढ़ती जा रही हैं। भारत हाइड्रोकार्बन सेक्टर के अनुकूल और प्रतिकूल दोनों क्षेत्रों में भागीदारी करने के लिए प्रौद्योगिकीय एवं वित्तीय रूप से सक्षम है। हमारी परिष्करण क्षमता 2012 तक वर्तमान में 120 मिलियन टन से बढ़कर दो गुनी होने की संभावना है। यहां विस्तृत बाजार और संगठित वितरण चैनल उपलब्ध हैं। मुझे विश्वास है कि इस महत्वपूर्ण क्षेत्र में द्विपक्षीय सहयोग की अपार संभावनाएं है, जिनका हमें भरपूर फायदा उठाना चाहिए।

मैं, बैंकिंग, सूचना प्रौद्योगिकी, संचार प्रौद्योगिकी, उच्च प्रौद्योगिकी क्षेत्रों, पावर सैक्टर, फार्मास्यूटिकल्स और कपड़ा उद्योग में संयुक्त निवेश के लिए अपार संभावनाओं का भी उल्लेख करना चाहूँगा। भारतीय एवं रूसी उद्यम तीसरे देश के बाजारों में भी परस्पर सहयोग से अपने व्यापार को फैला सकते हैं।

रूस अपरिष्कृत हीरों के उत्खनन के मामले में विश्व का दूसरा सबसे बड़ा देश है। भारत इस मामले में विश्व का अग्रणी देश है, जिसका विश्व के खनन उत्पाद में 80% से भी अधिक हिस्सा है। अन्तर्राष्ट्रीय आभूषण बाजार में भारतीय कंपनियों का वर्चस्व है इसलिए आपसी सहयोग के लिए अवसर तलाशने की आवश्यकता है।

अगले वर्ष फरवरी माह में व्यापार और निवेश पर भारत-रूस फोरम की दूसरी बैठक भारत में ही आयोजित होगी। हमें रूस के व्यापारियों और उद्यमियों से भरपूर सहयोग की अपेक्षा है। ऐसी बैठकें प्रायः होती रहनी चाहिए और इसके ठोस परिणाम प्राप्त होते रहेंगे।

यह आप सभी की मेहनत और उद्यम शीलता का परिणाम है और इन दो देशों की प्रगति की अन्य सभी देशों में भी चर्चा है। हमें अपने द्विपक्षीय आर्थिक संबंधों को प्रगाढ़ करने के लिए इसी ऊर्जा एवं भावना के साथ आगे बढ़ना होगा। मैं आपको आश्वासन देता हूँ कि इसको फलीभूत करने के लिए हमारी दोनों सरकारें पूरी तरह से कृत संकल्प हैं।

****